सुशीला 'दीदी' – एक रेखाचित्र

(5 मार्च 1905-15 जनवरी 1963)

मलविन्दर जीत सिंह वढ़ैच
गाँव व डाकघर सकेतड़ी, जिला पंचकुला 134001
फोन: (0172) 2556314
ईमेल: mjswaraich29@gmail.com

यदि ग्रह कभी हम प्राणी वर्ग को इकट्ठा करने के लिए बुलाये तो जाएं, तो 'दीदी' और 'भाभी' ऐसे विकट हालात में, जब कि सगे रिश्तेदार भी साथ छोड़ जाते हैं, एक साथ सांस लेते दिखाई पड़ेंगे।

सुशीला का जन्म एक सैनिक डॉक्टर कर्म चन्द के घर छोटे से गाँव दुत्तो चूहड़, जिला गुजरात (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। यह गुजरात तो था उत्तर पश्चिम में इस उपमहाद्वीप के बहुत अन्दर, जबकि भगवती चरण और भाभी के पूर्वज दूसरे गुजरात से, जो पश्चिमी समुद्र तट पर है, से आए थे और गुजराती थे। दिलचस्पी की बात यह है कि भ्रांति मिटाने के लिए, पँजाब से दूर वाले गुजरात को गुजरात काठियावाड़ कहा जाता था।

सुशीला के पिता, चाहे वे डॉक्टर थे जो अंग्रेज़ी सेना में नौकरी करते थे, लेकिन भगवती 'भाई' के स्वामीभक्त पिता की सोच के विपरीत, विदेशी शासकों से घृणा करते थे। जिस तरह पहले विश्व युद्ध में बड़ी बेरहमी से, साम्राज्य को बढ़ावा देने के लिए, विशेषकर भारतोय नवयुवकों का, खून बहाया गया था, उसको देखकर बागी बन गए थे। यहाँ तक कि उन्होंने 'वार सर्विस' मैडल लेने से इन्कार कर दिया था और बहुत ही नायाब खिताब, 'राय साहिब' भी ठुकरा दिया था, जबकि भगवती भाई के पिता ने ऐसा ही खिताब स्वीकार कर लिया था। डॉ. कर्म चन्द वास्तव में, बाल गंगाधर तिलक, जो उग्रभावी कांग्रेसी थे, के प्रशंसक थे। मन से देशभक्त होने के नाते, उसने अपने बच्चों को ऐसे स्कूलों में ही पढ़ाने का फैसला कर लिया था, जो विदेशी शासकों द्वारा स्थापित नहीं किए गए थे। यह ऐसा फैसला था, जो कि सुशीला का वोहरा परिवार में आने का कारण बना।

दुर्भाग्यवश सुशीला की माता का निधन अल्प आयु में ही हो गया, जब सुशीला, उसकी पहली संतान, अभी किशोर अवस्था में ही थी। इस प्रकार उसके दो छोटे भाइयों और दो छोटी बहनों की देखभाल उसके जिम्मे आ गई। घर में माँ न होने से, उसके पिता के छोटे भाई को जो गुजरांवाला (लेखक का भी ज़िला), जो गुजरात के साथ लगता है, में डाक्टर थे, बच्चों की संभाल तथा पढ़ाई की जिम्मेदारी सौंप दी गई थी। जब उसके दोनों छोटे भाई

हाई स्कूल में पहुँच गए तो उनको नशनल स्कूल में दाखिल कर दिया गया और तीनों बहनें भी, जैसे उनके पिता की इच्छा थी, कन्या महाविद्यालय जालन्धर में आ गईं। इस प्रकार सुशीला की अपनी पढ़ाई में देरी हो गई, क्योंकि जब तक उसके भाई-बहन उसकी संभाल में रहे उसे गुजरांवाला में अपने चाचा के घर रहना पड़ा। फलस्वरूप उसकी अपनी पढ़ाई लगभग अपनी छोटी बहनों के समानांतर ही चलती रही। वह कन्या महाविद्यालय में 1921 से 1927 तक पढ़ी।

यह कॉलेज राष्ट्रीय संस्थानों की कड़ी में से ही था, जो 'असहयोग आन्दोलन' के दौरान स्थापित किए गए थे। सौभाग्य से श्रीमती लज्जावती, जो इसकी संस्थापक प्रिंसिपल थी, और श्रीमती शन्नोदेवी, उसकी उत्तराधिकारी, विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना भरने के लिए जानी जाती थीं। इसीलिए उनके बहुत से विद्यार्थी बाद में स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए थे। अपने विद्यार्थी दिनों में ही सुशीला ने बहुत से देशभक्ति के गीत लिखे थे। लाला लाजपत राय की गिरफ्तारी के समय लिखा उसका गीत – गया बिआहन लाड़ा भारत का... (भारत का दूल्हा स्वतंत्रता दुल्हन को ब्याहने गया है...) जो उसने छपवाया और सारे पँजाब में बाँटा, बहुत ही लोकप्रिय हुआ था।

महाविद्यालय स ही लड़कियों की एक टोली 1926 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में शामिल होने देहरादून गई थी जहाँ नैशनल कॉलेज लाहौर से भगत सिंह और यशपाल जैसे देशभक्त विद्यार्थी भी गए थे। यहाँ ही उसकी भगवती तथा दुर्गा से पहली मुलाकात हुई थी। वे दोनों भी वहाँ इसो सम्मेलन में आए थे। इन जालंधर की लड़कियों को ही सम्मेलन में शामिल होने वालों में गोपनीय क्रांतिकारी पर्चे वितरण करने का काम सौंपा था। सुशीला ने यह काम अपनी सहेली लीला तथा और अन्य लड़कियों के साथ मिलकर बड़ी कुशलता से निभाया था। कुछ प्रतियाँ छुप-छुपाकर कई सरकारी अफसरों को भी डाक द्वारा भेजी गई थीं, जिससे तहलका मच गया था, परन्तु किसी को भी भेजने वालों का पता न लग सका था।